हल्दीघाटी

– श्यामनारायण पाण्डेय

प्रस्तुत पाठ में हल्दीघाटी के मैदान में राणा प्रताप के युद्ध कौशल का वर्णन है। राणा प्रताप अपने कुशल व साहसी घोड़े चेतक पर सवार होकर युद्ध के मैदान में उतरे। चेतक ने अद्वितीय योद्धा के समान युद्ध में राणा प्रताप का सहयोग किया। महाराणा प्रताप का वीरोचित गर्व भी इस अंश में चित्रित है। महाराणा प्रताप ने यह युद्ध मेवाड़ की स्वतन्त्रता तथा सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा के लिए लड़ा था। यह भारतीय इतिहास की एक अद्भुत घटना है। इस कविता के माध्यम से कवि आधुनिक युवा शक्ति को प्रेरणा देता है।

रण बीच चौकड़ी भर-भर कर,
चेतक बन गया निराला था ।
राणा प्रताप के घोड़े से,
पड़ गया हवा का पाला था ॥

गिरता न कभी चेतक- तन पर,
राणा प्रताप का कोड़ा था ।
वह दौड़ा रहा अरि-मस्तक पर,
या आसमान पर घोड़ा था ॥

जो तनिक हवा से बाग हिली,
लेकर सवार उड़ जाता था।
राणा की पुतली फिरी नहीं,
तब तक चेतक मुड़ जाता था ॥

कौशल दिखलाया चालों में,
उड़ गया भयानक भालों में ।
निर्भीक गया वह ढालों में,
सरपट दौड़ा करवालों में ॥

है यहीं रहा अब यहाँ नहीं,
वह वहीं रहा है वहाँ नहीं ।
थी जगह न कोई जहाँ नहीं,
किस अरि-मस्तक पर कहाँ नहीं ॥

बढ़ते नद-सा वह लहर गया,
वह गया गया फिर ठहर गया ,
विकराल वज्र-मय बादल -सा
अरि की सेना पर घहर गया ॥

भाला गिर गया, गिरा निषंग,
हय टापों से खन गया अंग ।
बैरी-समाज रह गया दंग
घोड़े का ऐसा देख रंग ॥

चढ़ चेतक पर तलवार उठा,
रखता था भूतल-पानी को ।
राणाप्रताप सिर काट-काट,
करता था सफल जवानी को ॥

कल कल बहती थी रण-गंगा,
अरि-दल को डूब नहाने को ।
तलवार वीर की नाव बनी,
चटपट उस पार लगाने को ॥

बैरी दल पर ललकार गिरी ,
वह नागिन सी फुफकार गिरी।
था शोर मौत से बचो, बचो ,
तलवार गिरी, तलवार गिरी ॥

पैदल से हय-दल गज-दल में ,
छप-छप करती वह विकल गई।
क्षण कहाँ गई कुछ पता न फिर,
देखो चमचम वह निकल गई ॥

क्षण इधर गई क्षण उधर गई,
क्षण शोर हो गया किधर गई।
था प्रलय चमकती जिधर गई,
क्षण शोर हो गया किधर गई॥

क्या अजब विषैली नागिन थी,
जिसके डसने में लहर नहीं ,
उतरी तन में मिट गये वीर,
फैला शरीर में जहर नहीं ॥

थी छुरी कहीं तलवार कहीं ,
वह बरछी-असि खरधार कहीं।
वह आग कहीं अंगार कहीं,
बिजली थी कहीं कटार कहीं॥

लहराती थी सिर काट-काट
बल खाती थी, भू पाट-पाट।
बिखराती अवयव बाट-बाट ,
तनती थी लोहू चाट-चाट॥

सेना-नायक राणा की भी,
रण देख - देख कर चाहे भरे।
मेवाड़ - सिपाही लड़ते थे
दूने-तिगुने उत्साह भरे ॥

क्षण मार दिया कर कोड़े से
रण किया उतर कर घोड़े से।
राणा रण - कौशल दिखा-दिखा,
चढ़ गया उतर कर घोड़े से॥

क्षण भीषण हलचल मचा मचा,
राणा कर की तलवार बढ़ी।
था शोर रक्त पीने को यह,
रण चण्डी जीभ पसार बढ़ी ॥

कहता था ''लड़ता मान कहाँ,
मैं कर लूँ रक्त स्नान कहाँ ?
जिस पर तय विजय हमारी है,
वह मुगलों का अभिमान कहाँ ?''

तब तक प्रताप ने देख लिया,
लड़ रहा मान था हाथी पर ।
अकबर का चंचल साभिमान,
उड़ता निशान था हाथी पर ॥

यह विजय मंत्र था पढ़ा रहा,
अपने दल को था बढ़ा रहा।
वह भीषण समर-भवानी को,
पग-पग पर बलि था चढ़ा रहा ॥

फिर रक्त देह का उबल उठा,
जल उठा क्रोध की ज्वाला से।
घोड़े से कहा ''बढ़ो आगे'',
'बढ़ चलो' कहा निज भाला से॥

हर-नस-नस में बिजली दौड़ी,
राणा का घोड़ा लहर उठा ।
शत-शत बिजली की आग लिये ,
वह प्रलय -मेघ -सा घहर उठा ॥

रंचक राणा ने देर न की,
घोड़ा बढ़ आया हाथी पर ।
बैरी-दल का सिर काट-काट,
राणा चढ़ आया हाथी पर ॥

वह महा प्रतापी घोड़ा उड़
जंगी हाथी को हबक उठा।
भीषण विप्लव का दृश्य देख,
भय से अकबर -दल दुबक उठा॥

क्षण भर छल बल कर लड़ा अड़ा,
दो पैरों पर हो गया खड़ा ।
फिर अगले दोनों पैरो को,
हाथी-मस्तक कर दिया गड़ा॥

यह देख मान ने भाले से,
करने की की क्षण चाह समर ।
इस तरह थाम कर झटक दिया,
हाथी की भी झुक गई कमर ॥

राणा के भीषण झटके से,
हाथी का मस्तक फूट गया।
अम्बर कलंक उस कायर का,
भाला भी दबकर टूट गया ॥

राणा वैरी से बोल उठा -
''देखा न समर भाला से कर ।
लड़ना तुझको है अगर अभी,
तो फिर लड़ ले भाला लेकर''।

"हाँ, हाँ, लड़ना है," कहकर जब,
बैरी ने उठा लिया भाला ।
क्षण भौंह चढ़ाकर देख दिया,
काँपे जो हाथ गिरा भाला ॥

राणा ने हँसकर कहा –मान,
अब बस कर दे हो गया युद्ध।
बैरी पर वार न करने से,
मेरा भाला हो रहा क्रुद्ध ॥

अपने शरीर की रक्षा कर,
भग जा भग जा अब जान बचा।"
यह कहकर भाला उठा लिया,
भीषणतम हाहाकार मचा॥

छिप गया मान हौदे तल में,
टकरा कर हौदा टूट गया।
भाले की हलकी हवा लगी,
पिलवान गिरा, तन छूट गया॥

अभ्यास

बोध प्रश्न

1. चेतक को प्रलय मेघ–सा क्यों कहा गया है ?
2. राणा प्रताप की तलवार को किसके समान कहा गया है?
3. अजब विषैली नागिन किसे कहा है ?
4. मानसिंह के हाथी की कमर क्यों झुक गई ?
5. अम्बर कलंक किसे और क्यों कहा गया है?
6. तो फिर लड़ ले भाला लेकर, यह किसने, किससे कहा ?
7. प्रताप के भाले के वार से मानसिंह कैसे बचा? उसके बदले में कौन मारा गया ?
8. हल्दीघाटी कहाँ स्थित है और यह क्यों प्रसिद्ध है ? वर्णन कीजिए ।
9. चेतक के शौर्य का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए ।
10. राणा प्रताप के युद्ध कौशल व वीरोचित व्यवहार का वर्णन अपने शब्दो में कीजिए ।

योग्यता विस्तार

1. हल्दीघाटी के सम्पूर्ण युद्ध का वर्णन सार रूप में लिखिए।
2. राणा प्रताप के घोड़े की तरह अन्य वीर घोड़ों का इतिहास मिलता है, कल्पना कीजिए उनमें से एक घोड़ा आपके पास है। आप घोड़े के साथ कहाँ और क्यों जाना चाहेंगे? अपनी कल्पना को लिखिए।
3. वीरता के क्षेत्र में भारत सरकार द्वारा दिए जाने वाले 'पदक' की सूची बनाइए।

शब्दार्थ

तनिक- थोड़ी, निर्भीक - भयमुक्त, करवाल–तलवार, अरि–दुश्मन, असि–हथियार, अवयव–हिस्सा, निशान–ध्वज, विप्लव - उथल–पुथल (प्रलय), पिलवान–महावत

* * *